गगन गिल

जाते हुए

एक दिन प्रेम आयेगा तुम्हारे घर और घर में अन्न न होगा। एक दिन प्रेम आयेगा तुम्हारे जीवन में और भर चुके होंगे सब पन्ने। एक दिन प्रेम आयेगा तुम्हारे पास और तुम्हें मालूम न होगा, प्रेम है यह।

बदल गया होगा उसका मुख इस जन्म तक आते-आते। थक गया होगा उसका सिर। भर चुकी होगी उसमें उम्र भर की नींद।

जाते हुए प्रेम देखेगा तुम्हें अजीब ख़ाली आँखों से। मृत्यु के करीब सपनीली हो जायेंगी उसकी आँखें। और गीली।

Gagan Gill was born in Delhi in 1959, and worked as a journalist before turning to poetry and literature as a profession. Each of her collections of poetry has a unique theme, and is imbued with profound insight. Our poem is from यह आकांक्षा समय नहीं (1998).